ए.आई. के सामाजिक प्रभाव एवं चुनौतियों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

डॉ अनीता टाक, सहायक आचार्य, समाजशास्त्र, राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा

मानव जीवन के अस्तित्व और प्रगति के लिए जरूरी है कि जीवन के हर पहलू में विज्ञान और तकनीक का इस्तेमाल हो, इस बात को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है कि नवीन अविष्कारों ने हमें बहुत लाभ पहुंचाया है और यह तकनीकी है जिसने मानव जीवन को अत्यंत सहज, सरल और रोचक बना दिया है लेकिन हाल ही में जीएम क्रॉप और डिजाइनर बेबी जैसे मुद्दों ने नैतिकता और तकनीक को एक दूसरे के विरुद्ध खड़ा कर दिया है ।डिजाइनर बेबी की संकल्पना सामाजिक असमानता व भेदभाव की एक नई खाई पैदा करेगी समाज में पहले से मौजूद असमानताओं के बीच यह कदम उत्प्रेरक का कार्य करेगा डिजाइनर बेबी अधिक बेहतर दिखने वाले अधिक कुशल व अधिक बुद्धिमान बनाया जा सकेंगे। डिजाइनर बेबी को समझ में ज्यादा अवसर प्राप्त होंगे जिससे समाज का एक वर्ग अधिक तेजी से आगे बढ़ेगा इससे समाज में एक नए वंचित वर्ग का जन्म होगा।

प्रस्तुत शोध पत्र में तकनीक व नैतिकता के द्वंद्व के समाजशास्त्रीय विश्लेषण का लघु प्रयास किया गया है तथ्यों के संकलन के लिए हमने द्वितीयक सामग्री के रूप में विभिन्न पत्र -पत्रिकाओं और इंटरनेट से प्राप्त तथ्यों का प्रयोग किया गया है.